सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-28 अंक-23 7 से 21 दिसम्बर, 2013 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 1 रुपया

किसानों-मजदूरों ने निकाला भूमि अधिग्रहण विरोधी मार्च

लखनऊ (उ.प्र.): भूमि अधिग्रहण नीति के खिलाफ प्रदेश के हजारों किसानों व खेत-मजदूरों ने भमि अधिग्रहण-विरोधी मोर्चा, उत्तर प्रदेश के बैनर तले लखनऊ में रैली प्रदर्शन करके मुख्यमंत्री को चार सूत्री मांगों का एक ज्ञापन सौंपा।

प्रदेश के दूर दराज इलाकों से आए किसानों व खेत-मजदूरों ने चारबाग रेलवे स्टेशन से विधान सभा तक जुलूस निकाला। इस जुलूस को लक्ष्मण मेला ग्राऊण्ड तक जाना था मगर प्रशासन की आज्ञा न मिलने से यह जुलूस विधान सभा के सामने सभा में तब्दील हो गया। प्रदर्शनकारी केन्द्र व राज्य सरकार की 'भूमि अधिग्रहण नीति' का विरोध कर रहे थे। जुलूस का नेतृत्व भूमि अधिग्रहण-विरोधी मोर्चा के प्रदेश संयोजक कॉमरेड बेचन अली, पुष्पेन्द्र विश्वकर्मा, इन्द्रकुमार शुक्ला, पारसनाथ सिंह, शेषमणि उपाध्याय, शैलेन्द्र कुमार आदि लोगों ने किया। विधानसभा के सामने हुई सभा की अध्यक्षता कॉ. बेचन अली ने की। सभा को कॉमरेड पुष्पेन्द्र विश्वकर्मा, पारसनाथ सिंह, शैलेन्द्र कुमार व इन्द्र कुमार शुक्ला ने सम्बोधित किया और कृषि भूमि के अधिग्रहण का विरोध किया।

राष्ट्रीय राजमार्ग 56 के चौड़ीकरण व इस पर बनने वाले 17 बाईपासों का भी विरोध किया। वक्ताओं ने राष्ट्रीय राजमार्ग 56 को 24 मीटर के अन्दर चौड़ा करने, सभी बाईपासों को रद्द करने, रेलवे क्रॉसिंग पर ओवर ब्रिज तथा बाजारों में फ्लाई ओवर बनाने की मांग की। वक्ताओं ने कहा कि सरकार हमारी मांगों पर यदि विचार नहीं करती तो हम अपनी जमीन की रक्षा के लिए हर कदम पर लड़ेंगे। हम अपनी जान दे देंगे लेकिन अपनी जमीन नहीं देंगे। रैली का नेतृत्व कर रहे नेताओं ने अपनी मांगों का मांगपत्र प्रशासनिक अधिकारियों को सौंपा।

सुन्दरबन में थर्मल प्लांट लगाने की योजना पर्यावरण के लिए विनाशकारी है – एसयूसीआई (सी)

एसयूसीआइ(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 3 दिसम्बर को जारी एक बयान में कहा:

यह गहरी चिन्ता का विषय है कि पर्यावरणविदों, भूवैज्ञानिकों, विषय के विशेषज्ञों और बांग्लादेश के आम लोगों की राय की बिल्कुल अनदेखी करते हुए भारत और बांग्लादेश की सरकारें बांग्लादेश के खुलना जिले में सुन्दरबन क्षेत्र से लगते रामपाल में 1834 एकड़ जमीन हथिया रही है और वहाँ थर्मल पॉवर प्लाण्ट लगाने के मद्देनगर लगभग 8000 किसान परिवारों को बेदखल कर रही है। इसके नतीजतन इन विशाल संख्यक बेदखल परिवारों को वस्तुतः तबाही में झौंक देने के अलावा, जले हुए ईन्धन की राख और अन्य रसायनिक पदार्थ नदियों, उससे निकलने वाली नहरों और कृषि को भारी नुकसान पहुँचाएंगे। साथ ही, ठोस और तरल कूड़े-कर्कट से और उससे निकलने वाले मल से होने वाला वायु प्रदूषण, पर्यावरणीय प्रदूषण इको-सिस्टम और जैव-विविधता पर नुकसानदेह असर डालेगा और मानव स्वास्थ्य पर जहरीला असर डालेगा। सर्वोपरि, यह कुख्यात संयुक्त उद्यम सुन्दरबन, नदी-मुहाने के बहुत बड़े जंगल, डेल्टा और भारत व बांग्लादेश, दोनों के विस्तृत क्षेत्र में फैले एक यूनेस्को विश्व-विरासत के अद्भुत दर्शनीय स्थल को धीरे-धीरे खात्मे की ओर धकेल देगा।

इन सब गम्भीर अंजामों से सही-सही वाकिफ होते हुए भी भारत और बांग्लादेश की सरकारें महज दोनों देशों के शासक पूँजीपतियों के घिनौने वर्ग स्वार्थ में इस घोर जनविरोधी विनाशकारी योजना को लागू करने जा रही हैं। इससे पर्यावरण और परिस्थितिक सन्तुलन के लिए गंभीर खतरा पैदा होना तय है। बांग्लादेश के जाने-माने बुद्धिजीवियों, वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों और वामपंथी एवं लोकतांत्रिक पार्टियों व ताकतों की पहल पर लोगों ने इस योजना का प्रतिरोध करने के लिए एक जोरदार आन्दोलन छेड़ा हुआ है। यह याद दिलाना यहाँ संगत होगा कि तत्कालीन सीपीआई(एम)-नीत पश्चिम बंगाल राज्य सरकार के साथ सांठगांठ में भारत सरकार ने पश्चिम बंगाल के सुन्दरबन क्षेत्र में एक परमाणु बिजली प्लाण्ट लगाने का फैसला लिया था। वहाँ नदियों के छोर पर पैदा होने वाली वनस्पति को काट कर, पेड़-पौधों को नष्ट कर और नदियों व उनमें आकर गिरने वाली उपनदियों को प्रदूषित कर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को एक पर्यटन स्थल और तैरता हुआ होटल स्थापित करने का भी कदम राज्य सरकार द्वारा मंजूर किया गया था। हमारी पार्टी एसयूसीआई (सी) के नेतृत्व में उनके इस स्वार्थपूर्ण कदम और घिनौनी साजिश को आखिरकार नाकाम कर देने के लिए दीर्घकालिक आन्दोलन खड़ा किया गया था।

हमारा दृढ़ मत है कि भारत के जनवाद-पसन्द लोग बांग्लादेश के लोगों द्वारा छेड़े गए प्रतिरोध आन्दोलन को अपना खुद का आन्दोलन समझेंगे और दोनों देशों के लोगों का संयुक्त संघर्ष भारत और बांग्लादेश की सरकारों को इस विनाशकारी योजना को वापस लेने के लिए मजबूर कर देगा।

और 'दामिनी' नहीं!
महिलाओं पर बढ़ते अपराधों पर रोक लगाओ!!

अखिल भारतीय
संसद मार्च
30 दिसम्बर 2013
10:30 बजे रामलीला मैदान, नई दिल्ली में एकत्रित हों

सम्मेलन
29 दिसम्बर 2013
मावलंकर सभागार, रफी मार्ग नई दिल्ली, प्रातः 10 बजे

राज्य स्तरीय
प्रदर्शनी एवं धरना
16 दिसम्बर 2013, 10:30 बजे जन्तर-मन्तर

कॉमरेड प्रतिभा कुमारी की मृत्यु एक बहुत बड़ी क्षति

बैंगलोर में 7 नवम्बर को स्मृति सभा में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण

कॉमरेड अध्यक्ष, मंच पर विराजमान बिरादराना संगठनों के नेतागण, हमारी पार्टी की राज्य कमेटी और जिला कमेटियों के सदस्यो और कॉमरेडो व दोस्तो,

मानव समाज में समाज की शुरूआत से ही मृत्यु कोई नहीं बात नहीं है। यही वजह है कि हर मृत्यु समाज में एक शून्यता पैदा कर देती है; लेकिन नया जन्म उस शून्यता को भर देता है। पर कभी-कभी ऐसी मृत्यु हो जाती है और ऐसी शून्यता पैदा कर देती है कि उस शून्यता को भरने में लम्बा समय लगता है। ऐसी ही मृत्यु 2 नवम्बर को हुई–जैसे बिन बादल के आसमान से बिजली गिरी हो। यह हमारी पार्टी की बैंगलोर जिला कमेटी सदस्य और ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) की प्रदेश अध्यक्ष कॉमरेड प्रतिभा कुमारी की अकाल मौत थी। इसका मायने क्या है यह वही समझ सकते हैं जो मृत्यु को इस तरह देखते हैं –इतनी अचानक, इतनी अनापेक्षित, इतनी अविश्वसनीय कि उनके प्रति 'बिन बादल के आसमान से बिजली गिरने' की कहावत का अर्थ स्पष्ट हो जाता है।

हम एक मर रही सभ्यता में रह रहे हैं। यहाँ तमाम महान चीजें, तमाम ऊंचे दर्जे की चीजें, तमाम उदात्त चीजें मर रही हैं, मूल्यबोध मर रहे हैं। इस समाज में बैंगलोर जैसे जिले में ऐसा एक महान चरित्र सृजित करना जो सर्वहारा क्रान्तिकारी मूल्यबोधों से अनुप्राणित हो, एक बहुत ही कष्टसाध्य और कठिन संघर्ष है। कॉमरेड प्रतिभा एक ऐसे ही संघर्ष की उपज थी। वे जब संगठन में आई थी तब एक ईमानदार, अकपट, सीधी-सादी और कौतूहल से पूर्ण आम लड़की थी। संगठन में आने पर वे इस युग की सर्वश्रेष्ठ चिन्तनधारा – मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा के सम्पर्क में आई और उन्होंने सर्वहारा मूल्यबोध हासिल किये जो मानव को महान बनाते हैं।

उनके मर जाने से महज एक पार्टी की ही क्षति नहीं हुई; हां हमारी पार्टी की तो यह एक बहुत बड़ी क्षति है ही, लेकिन यह पूरे समाज के लिए भी एक बहुत बड़ी क्षति है। समाज क्रान्ति के लिए पुकार रहा है। क्रान्ति कौन लाएगा? कहाँ हैं वे क्रान्तिकारी? हम उन्हें उंगलियों पर गिन सकते हैं। क्रान्ति की समग्र सामाजिक जरूरत के सम्बन्ध में हम क्रान्तिकारी बहुत ही कम हैं। हालाँकि यह बड़ा आशाजनक है कि हमारी पार्टी के सम्पर्क में आ कर, क्रान्तिकारी आन्दोलनों में शामिल होते हुए, पार्टी प्रक्रिया के प्रति समर्पित होते हुए ऐसे क्रान्तिकारी सर्जित होते जा रहे हैं लेकिन फिर भी संख्या में अभी बहुत कम हैं। जो क्रान्तिकारी प्रक्रिया पैदा करती है उसे और उनमें से जब कोई मरता है; यह बहुत बड़ी क्षति होती है। जो उन्हें जानते हैं और यहाँ उपस्थित कई लोग उन्हें जानते हैं, वे बहुत ही अल्पायु में पार्टी में आ गई थी। वे मंगलोर के लगभग ग्रामीण पृष्ठभूमि से थी, अब बहुत ही पढ़ी-लिखी क्वालीफाइड थी। शायद उन्होंने पार्टी में शामिल होने से पहले अपना पोलीटैक्निक डिप्लोमा कर लिया था। उन्हें जीवन का ज्ञान था, समाज का ज्ञान था। सर्वहारा संस्कृति और मूल्यबाधों के सम्पर्क में आते हुए चूँकि उनमें पहले से कुछ मूल्यबोध थे जो उन्होंने समाज से ग्रहण किए थे, वे पार्टी के उन्नततर मूल्यबोधों, उन्नत नैतिक मूल्यों के प्रति आकर्षित हुई। सभी व्यक्तिगत चीजों को छोड़ कर वे पार्टी में शामिल हुई और एक बार जब शामिल हो गई तो उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनके परिवार ने महसूस किया कि अपने परिवार के सदस्यों के प्रति उनमें कोई प्यार, स्नेह-ममता नहीं है क्योंकि अक्सर वे उनसे मिलने नहीं जाती थी। लेकिन हम जानते हैं, हमने कॉमरेड घोष से सीखा है कि उनके माता-पिता के लिए प्यार में वे सारे समाज का दुख-दर्द देख पाई। वह उसे क्रान्तिकारी आन्दोलन में लाया, समाज को बदलने के लिए, एक नई सभ्यता बनाने के लिए जिसमें इन्सान ऐसे अपराधी, ऐसे दरिन्दे नहीं बनेंगे जैसे कि इस समाज में बन रहे हैं–एक ऐसी नई सभ्यता का सृजन करने के लिए जो मौजूदा शोषणमूलक व्यवस्था, पूँजीवाद के खिलाफ संघर्ष में आती है। जो पूँजीवाद आज इतना पुराना हो चुका है कि मर रहा है।

बैंगलोर में स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती

लेनिन ने सैकड़ों साल पहले दिखाया था कि पूँजीवाद की उच्चतम अवस्था में पहुँच जाने पर पूँजीवाद प्रतिक्रियावादी हो चुका है, मर रहा है, मरणासन्न है, तमाम अच्छी और महान चीजों को नष्ट कर रहा है लेकिन यही पूरी बात भी है। लेनिन ने साथ-साथ यह भी दिखाया था कि जब कोई व्यवस्था मरती है तो इससे पहले यह अपने गर्भ से एक नई व्यवस्था को जन्म देती है। इसी वजह से उन्होंने केवल यही नहीं कहा कि यह साम्राज्यवाद का युग है, साथ ही साथ यह भी दिखाया कि यह सर्वहारा क्रान्ति का युग भी है।

रूस में सर्वहारा क्रान्ति सम्पन्न कर उन्होंने दुनिया के सामने यह साबित कर दिया कि क्रान्ति सम्भव है। लेकिन जिस तरह प्रकृति में होता है, उस तरह मानव समाज में क्रान्ति अपने आप नहीं होती है। इसमें चेतना की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। सचेत कार्रवाई के बिना, सचेत संघर्ष के बिना समाज में क्रान्ति नहीं आती है। उसके लिए हमें क्रान्तिकारी चाहिएं। लेकिन महज इसे सैद्धान्तिक रूप में समझ कर ही हम क्रान्ति नहीं कर सकते। हमें उस जीवन का बीड़ा उठाना होगा। सभी देशों में जहाँ क्रान्तियाँ हुई, चाहे वह रूस, चीन, वियतनाम या क्यूबा हो या कोई और देश, जीवन की इस अवधारणा और मूल्यबोधों का अनुसरण करते हुए क्रान्तिकारियों ने अपनी भूमिका निभाई है। हमारे समाज में, कॉमरेड शिवदास घोष ने वहीं संघर्ष छेड़ा था। पार्टी का मतलब कुछ व्यक्तियों का जमावड़ा नहीं है, यह एक प्रक्रिया है, चिन्तन की एक प्रक्रिया और श्रम करने की एक प्रक्रिया। अर्थात् यह चिन्तन की द्वन्द्वात्मक वस्तुवादी प्रक्रिया और काम की सामूहिक प्रक्रिया है। खुशी-खुशी, स्वेच्छा से इस प्रक्रिया के प्रति खुद को समर्पित कर देने से ही हम इस प्रक्रिया की उत्तम उपज बन जाते हैं। उन्नततर मूल्यबोध, सर्वहारा क्रान्ति के मूल्यबोध, सर्वहारा क्रान्तिकारी संस्कृति को हासिल करके ही कोई उन्नततर चरित्र हासिल कर सकता है।

प्रतिभा कुमारी ने इसी प्रक्रिया से संघर्ष किया। वे इतनी दृढ़ संकल्पित थी कि उन्होंने बहुत जल्दी इस संस्कृति को हासिल कर लिया और इस महान स्तर पर पहुँच गई। वे इतनी तेजी से विकसित हो रही थी कि हाल ही में वे हमारे महिला संगठन, ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की कर्नाटक राज्य कमेटी की अध्यक्ष चुनी गई थी। वे पार्टी की बैंगलोर जिला कमेटी की सदस्य बनी और एक उच्च स्तर पर पहुँची। जो उन्हें जानते हैं उन्हें पता है कि कितनी विनीत और कितनी प्यारी थी वे और कभी-कभी कितनी दृढ़ संकल्पित थी, कितनी दृढ़ इरादे की थी। पार्टी से सीख कर जो फैसला उन्होंने लिया उस पर वे बहुत दृढ़ थी, ऐसा चरित्र हमारे समाज में बहुत ही विरला है, हमारे जैसे समाज में एक महिला के मामले में तो और भी विरला है, यह एक पिछड़ा हुआ देश है, जहाँ हमारे देश की विशाल बहुसंख्यक महिलाएं इतनी दब्बू हैं कि उनकी कोई स्वतंत्रता नहीं है। यह एक ऐसा देश है जिसमें आजादी आन्दोलन के चलने के दौरान सामन्ती विचारों को परास्त नहीं किया गया। वे सामंती विचार, सामन्ती दस्तूर, महिलाओं के सम्बन्ध में सामन्ती संस्कृति अभी तक भी प्रचलित हैं, व्याप्त हैं। देखिए क्या चल रहा है–जातिवाद, साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयता, क्षेत्रीय कट्टरता, भाषाई कट्टरता, सब लगातार बढ़ती जा रही हैं। इस समाज में, लड़ना इतना आसान नहीं है। इसमें से महिलाओं को क्रान्तिकारी बनाना न केवल एक बहुत बड़ा काम है बल्कि मुश्किल भी है। उच्च संस्कृति और चरित्र, उन्नत नीति-नैतिकता और मूल्यबोधों को हासिल करके जब महिलाएं इस आन्दोलन, क्रान्तिकारी आन्दोलन में आती हैं तो लोग आकर्षित होते हैं।

मैं कॉमरेडों को बताता हूँ कि जीवन में जो बहुत ही सुनिश्चित है वह मौत है। मौत ही केवल सुनिश्चित चीज है जो हम सब को आती है। प्रतिभा कुमारी की मौत की खबर जब अखबारों में आई, तो बहुत सारे लोग जो उन्हें जानते थे, उन्होंने अपना गहरा दुख व्यक्त किया। वे समझ गए कि यह उनके लिए बहुत बड़ी क्षति है, यह पूरे समाज की क्षति है।

स्त्री और पुरुष, सभी लोगों के सम्मिलित संघर्ष से समाज बदलेगा लेकिन एक पिछड़े हुए देश में जब महिलाएं क्रान्तिकारी आन्दोलन में आती हैं तो उसका और भी ज्यादा प्रभाव पड़ता है। इसी कर्नाटक में ही, जो परिवर्तन आ रहे हैं वे निश्चय ही हमारी सृष्टि हैं। हमारे संघर्ष का नतीजा हैं। निश्चय ही उसमें हमारी महिला साथियों ने एक विशिष्ट भूमिका, इस समाज को बदलने के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी बैंगलोर में मैं 1965-66 में पार्टी बनाने के लिए आया था। उस समय यह शहर इतना अराजनैतिक था कि आज आपके लिए उसका अनुमान लगाना भी मुश्किल है। अगर मैं बैंगलोर की उन दिनों की और आज के दिनों की तस्वीर से तुलना करूँ तो आप फर्क साफ देख सकते हैं। आज बैंगलोर में, जो कुछ घटना घटती है तो आन्दोलन खड़ा हो जाता है। यह हमारी वजह से है। इतिहास एक दिन बताएगा कि एसयूसीआई(सी)–सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) के संघर्ष से बैंगलोर में चेतना का उदय हुआ और इसमें इतिहास इस पहलू को भी बताएगा कि जहाँ तक बैंगलोर की राजनैतिक परिस्थिति का सम्बन्ध है हमारी महिला कॉमरेडों ने बहुत ही अहम भूमिका अदा की है। उनमें से एक थी कॉमरेड प्रतिभा कुमारी।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

कॉमरेड प्रतिभा कुमारी...

(पृष्ठ 2 का शेष)

कॉमरेडो, मानव है एक प्रक्रिया की उपज। मानव अपनी चिन्तन शक्ति के साथ अगर सही ढंग से और सही प्रक्रिया से एक ऐतिहासिक तौर पर तयशुदा लक्ष्य से संघर्ष करे, तो यह ऐतिहासिक तौर पर सम्भव है कि वह चिन्तन की बहुत बड़ी शक्ति वाले एक महान मस्तिष्क–मार्क्स जैसा बन सकता है। यह सम्भव है, यह बात सच है। लेकिन केवल चाहने और संघर्ष करने से ही क्या मैं मार्क्स जैसा बन सकता हूँ? नहीं, यह संघर्ष मार्क्स ने जिस प्रक्रिया से संचालित किया, संघर्ष की वह प्रक्रिया अधिक महत्वपूर्ण है–एक सही द्वन्द्वात्मक वस्तुवादी दृष्टिकोण से, सत्य को जानने के लिए परिवर्तन के लिए क्रान्ति के उद्देश्य के प्रति पूरी तरह समर्पित हो जाते हुए अगर संघर्ष करे तो वह मार्क्स जैसा बन सकता हैं। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टालिन, माओ, शिवदास घोष सभी संघर्ष की इस प्रक्रिया की उपज थे। अगर हम पार्टी प्रक्रिया के प्रति समर्पण नहीं करते जिसने संघर्ष की इस प्रक्रिया की सृष्टि की, तो क्या ऐसी बात है कि हम शून्यता में हैं? नहीं, तब हम पार्टी से बाहर की दूसरी किसी प्रक्रिया में हैं। चिन्तन की जो बुर्जुआ प्रक्रिया है वह काम कर रही होगी; अगर मैं क्रान्ति के उद्देश्य और पार्टी प्रक्रिया के प्रति खुशी–खुशी, स्वेच्छा से, पूर्ण रूप से समर्पण नहीं करता हूँ तो मैं जाने–अनजाने बुर्जुआ प्रक्रिया द्वारा प्रभावित हो जाऊँगा। प्रतिभा कुमारी इस बात को समझती थीं। इसलिए पार्टी प्रक्रिया से उन्होंने संघर्ष किया। दूसरे भी कई कॉमरेड हैं। सभी को आना चाहिए, क्रान्ति के उद्देश्य के साथ जुट जाना चाहिए; संघर्ष की सही प्रक्रिया से वे अच्छे क्रान्तिकारी बन सकते हैं। हमने उनको खो दिया है। उनके देहान्त से पैदा हुई शून्यता को भरने के लिए कितनी जल्दी से आप काम करते हैं, यह आप कॉमरेडों पर निर्भर करता है। संघर्ष की इस प्रक्रिया में कितनी तेजी से आप युवाओं को, युवक–युवतियों को आगे ला सकते हैं, कितनी शीघ्रता से आप अपने आपको विकसित करते हैं–संघर्ष की इसी प्रक्रिया पर निर्भर करता है हमारा विकास, हमारा स्तर उन्नयन और हमारी पार्टी का प्रसार।

उनके देहान्त ने यह जरूरत पैदा कर दी है। बहुत सारे युवक–युवतियाँ पार्टी में आ रहे हैं, निश्चित ही पार्टा की ओर आकर्षित हुए हैं लेकिन इसमें उनकी अहम भूमिका रही। वह संघर्ष जारी रहेगा। प्रतिभा कुमारी की ही तरह और बहुत सारे क्रान्तिकारी इसमें रहेंगे। जब संघर्ष चल रहा हो तो निश्चित होगा कि यह घटना घटित होगी, हमारा संघर्ष निश्चित करता है कि कैसे कोई महान बन सकता हैं। अगर हमें उनसे कुछ सीखना है तो वह यह कि वे संघर्ष में थीं, उनमें बहुत सम्भावनाएं थी, वे बहुत होनहार थीं, वे बहुत अच्छी कॉमरेड बन सकती थी। अचानक मौत ने उनको हमसे छीन लिया। यह एक अलग बात है। हमारे दश में ऐसी दुखद घटनाएं अक्सर होती हैं। एक अत्यन्त विकसित कॉमरेड रतन मुखर्जी भी एक दिन इसी तरह अचानक गुजर गए थे जिन्हें मरणोपरान्त पार्टी की स्टाफ सदस्यता दी गई थी जो एक पेशेवर क्रान्तिकारी होने की मान्यता है। कुछ साल पहले, कॉमरेड सौरभ बोस अचानक एक दिन गिर पड़े थे और चल बसे थे जिन्हें आप में से कई जानते थे। उन्होंने लम्बे अर्से तक तमिलनाडू में काम किया था। इतनी अचानक, इतना दुखदायी था उनका मर जाना। इस बुर्जुआ समाज में, विज्ञान दो कारणों में से स्वछन्द रूप से पनप नहीं सकती। पहला है यह बुर्जुआ वर्ग के नियन्त्रण में है। उद्योग तय करते हैं कि शोध किस रास्ते जारी रहने चाहिएं, कोई स्वतंत्रता नहीं है। दूसरे, जो शिक्षा दी जा रही है, वह ऐसी है कि बुर्जुआ समाज में ऐसे पूर्वाग्रहों से डाक्टर मुक्त नहीं हैं, ऐसे पूर्वाग्रहों से वैज्ञानिक मुक्त नहीं हैं। एंगेल्स ने बहुत समय पहले दिखाया था कि द्वन्द्वात्मक रुख–रवैये और नजरिये, अध्ययन के केवल द्वन्द्वात्मक वस्तुवादी तरीके से ही हम जगत के सत्य का पता लगा सकता है। उसे बहुत कम लोग समझते हैं। जब इस पूँजीवादी शोषणमूलक व्यवस्था से समाज मुक्त हो जाएगा, जब समाजवाद आ जाएगा, जब विज्ञान पूर्वाग्रहों से मुक्त हो जाएगा, जब विज्ञान अबाध रूप से बढ़ता जाएगा, तब ऐसी मौत नहीं हुआ करेंगी। जब समाजवाद आ जाता है, विज्ञान एक ऐसे स्तर तक बढ़ जाएगा कि मानव को लम्बे अर्से तक जीने में मदद करेगा, लेकिन वह विज्ञान का विकास भी क्रान्ति की मांग करता है। जो लोग विज्ञान से प्यार करते हैं, उन्हें यह जरूर समझना चाहिए कि विज्ञान का विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक कि विज्ञान को मुनाफा कमाने की पूँजीवादी चालक शक्ति की जकड़बन्दी से मुक्त न कर दिया जाए। जिस दिन विज्ञान शोषकों के लालच से मुक्त हो जाएगा उस दिन ऐसी दुखदायी मौत नहीं होगी।

कई लोग सोचते हैं कि केवल गरीब लोग ही क्रान्ति के लिए लड़ते हैं। बिल्कुल नहीं। यह सही समझ नहीं है। सामाजिक परिवर्तन का जो नियम है उसके चलते क्रान्ति होती है। इसके बारे में जो सचेत हैं वे ही क्रान्तिकारी बनते हैं। मार्क्स गरीब आदमी नहीं थे, वे एक उच्च मध्यम वर्गीय परिवार से थे, एंगेल्स औद्योगिक घराने से थे, लेनिन भी उच्च मध्यम वर्गीय परिवार से थे। मौजूदा समय में क्रान्ति ऐतिहासिक तौर पर सर्वहारा क्रान्ति है जो केवल सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में ही सफल हो सकती है। तब क्या भूख के लिए लोग क्रान्ति के लिए लड़ते हैं? यह तो असली सिद्धांत का बुर्जुआ वर्ग द्वारा किया हुआ विकृतीकरण है। असल बात यह है कि जो लोग समाजिक परिवर्तन और विकास से सरोकार रखते हैं, जो सत्य और न्याय के लिए लड़ रहे हैं, जो उच्च मूल्यबोधों से प्यार करते हैं, वे लोग क्रान्ति के लिए आते हैं। कम्युनिस्ट बनने का संघर्ष एक महान संघर्ष है।

इसलिए इस महान संघर्ष के लिए प्रतिभा कुमारी ने अपने जीवन को समर्पित कर दिया था और मर गई। वे अपने पीछे जो संघर्ष छोड़ गई उस संघर्ष को हमें आगे बढ़ना है। कॉमरेडों को संघर्ष को आगे ले जाना है। क्रान्ति साकार करने के लिए आपको सैकड़ों, हजारों–हजार प्रतिभा कुमारियाँ तैयार करनी हैं। संघर्ष का अगर हम बीड़ा उठाते हैं केवल तभी हम अपनी क्रान्तिकारी श्रद्धांजली दे पाएंगे। हम उस कॉमरेड को श्रद्धांजली देते हैं जो अपने संघर्ष को आगे बढ़ाते हुए गुजर जाता है। एक महान जीवन है कम्युनिस्ट जीवन। जो कॉमरेड हमारे सेण्टरों में रहते हैं, उन्होंने देखा है, जब एक माँ मर जाती है तो यह एक बच्चे के लिए बहुत बड़ी क्षति है। उससे उत्पन्न शून्यता को इतनी आसानी से नहीं भरा जा सकता लेकिन हमारे परिवार में, हमारे सेण्टरों में, हमारे जीवन में, पार्टी जीवन में जब एक माँ मर जाती है, निस्संदेह एक बहुत बड़ी क्षति होती है, लेकिन पार्टी में बहुत सारी माताएं हैं। यह दर्द रहेगा लेकिन फिर भी वह शून्यता भरी जा सकती है। इतनी सारी माताएं होना, सही मायने में माताएं होना, ऐथिकल मातृत्व इस महान साम्यवादी आन्दोलन का एक महान सृजन है। मैं अपने बच्चों से प्यार करता हूँ लेकिन दूसरों के बच्चों से भी उतना ही प्यार करता हूँ। जीवन की यह एथिकल धारणा, सभी रिश्ते–नातों की धारणा है। रिश्ते–नातों की ऐथिकल धारणा गुणों की आपस मे कद्र करने से आती है, बुर्जुआ मानवतावाद इसे लाया था लेकिन बुर्जुआ मानवतावाद में, चूँकि यह व्यक्तिवाद, व्यक्ति स्वतंत्रता और मैं तुझे प्यार करता हूँ और तू मुझे–इस पर आधारित होता है, हमारे मूल्यबोधों को देखकर हम एक–दूसरे से प्यार करते हैं लेकिन मैं अध्यात्मवाद में विश्वास रखता हूँ, आप द्वन्द्वात्मक वस्तुवाद में विश्वास रखते हैं, फिर भी हम दोस्त हो सकते हैं लेकिन हकीकत यह है कि हम ज्यादा दिन एक साथ नहीं चल सकते क्योंकि हमारा मूल्योंबोधों की बुर्जुआ भावना–धारणा से मतभेद है और हमारे रास्ते अलग–अलग हैं। जबकि यहां कॉमरेड–कॉमरेड के बीच हमारा रिश्ता वैचारिक है, आप मार्क्सवाद में विश्वास रखते हैं और मैं भी; आप भी कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तन को मानते हैं और मैं भी; आपका भी लक्ष्य पूँजीवाद के खिलाफ समाजवादी क्रान्ति करना है और मेरा भी। मकसद एक है, नजरिया एक है, चिन्तन प्रक्रिया वही है, इसलिए हम जीवन भर एक साथ चल सकते हैं। यह है रिश्तों के बारे में कम्युनिस्ट धारणा। रिश्ते की यह उच्चतम धारणा आप मार्क्स और एंगेल्स में देखते हैं। एंगेल्स नहीं होते तो मार्क्स भूख से मर गये होते। मार्क्स और उनके परिवार को बचाने के लिए एंगेल्स को नौकरी करनी पड़ी। हालांकि वे एक औद्योगिक घराने से थे फिर भी उन्होंने मार्क्स की सभी कृतियों को अपने दिल से लगाकर उनकी रक्षा की। मार्क्स की मृत्यु के बाद उन्होंने इन सब को सम्पादित किया, सुधारा और प्रकाशित किया। ऐसे होते हैं कम्युनिस्ट रिश्ते। यहाँ जो सच्चा प्यार हम पाते हैं वह उस प्यार से बड़ा होता है जो हम साधारण परिवारों में देखते है। माँ–बाप यह नहीं समझते कि बच्चे क्यों पार्टी में जाते हैं। यह महान जीवन है। वे जीवन में चिन्तन में व्यवहार में, आदतों में, अभ्यास में जीवन की पुरानी धारणा से पूरी तरह अलग जीवन की एक नई धारणा के सम्पर्क में आ जाते हैं, इन्हें अर्जित करने का यह संघर्ष है, यह संघर्ष दुनिया की सभी कम्युनिस्ट पार्टियों में विभिन्न देशों में सभी क्रान्तिकारियों का संघर्ष है। जब हम विभिन्न देशों में समाजवाद कायम कर देते है, जब समाजवाद विभिन्न देशो में वर्गों के उन्मूलन की परिस्थिति पैदा कर देगा, तब साम्यवाद आएगा। तब क्रान्तिकारी जीवन इतना आम, इतना स्वाभाविक हो जाएगा, हमारा संघर्ष उसके लिए है।

वह एक महान संघर्ष है। मेरा मानना है कि इस दुख ने एक नया चरित्र ले लिया है। जब कॉमरेड शिवदास घोष का निधन हुआ, वह भी एकदम अचानक हुआ तो अकथनीय दुख हुआ था, सालो साल तक मैं खुद पर काबू नहीं कर पाया था। फिर खुद को सम्भाला, काबू पाया लेकिन आज भी कभी–कभी अपने आँसुओं को रोक नहीं पाता। आज भी जब कभी मैं उनके जीवन–संघर्ष को याद करता हूँ तो मेरे आँसू बहने लगते हैं। मैं ही जानता हूँ कि कितना गहरा दर्द, कितनी गहरी व्यथा–वेदना होती है। मैं कॉमरेडों को यह बयां नहीं कर सकता कि मैं दिल में कितना दर्द महसूस करता हूँ। ऐसा होता है। लेकिन इस दर्द ने मुझे असहाय नहीं बनाया। उनकी मौत हमें प्रेरणा देती है। यह दर्द कॉमरेडों को प्रेरणा दे सकता है। उनकी मौत के बाद मैंने अहसास किया कि मैंने उनसे जो कुछ सीखा है उसे जन–जन तक ले जाना है। हर पल मुझे उनके चिन्तन को आगे ले जाना है। जो दर्द आदमी को असहाय, लाचार बना देता है वह प्यार के व्यक्तिगत रूप से आता है। निर्वैयक्तिक रिश्ते और निर्वैयक्तिक प्यार आदमी को असहाय नहीं बनाता है, लाचार नहीं बनाता है बल्कि उनके अधूरे छोड़े काम को पूरा करने की प्रेरणा देता है। प्रतिभा कुमारी सारी पार्टी को रुला गई लेकिन कोई भी कॉमरेड असहाय व लाचार महसूस नहीं करता है। उल्टे, मैंने देखा कि वे इस संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए, क्रान्ति के उद्देश्य के प्रति और भी समर्पित कोने का दृढ़ संकल्प ले रहे हैं। उनके बहुत सो प्रशंसकों, समर्थकों व हमदर्दों को उनकी मौत ने पार्टी के करीब ला दिया है। यह महज मौत नहीं है। एक क्रान्तिकारी की मौत भी क्रान्ति के लिए माहौल तैयार करती है। मैं कॉमरेडों से यही अनुरोध करता हूँ कि वे पार्टी को गहराई से समझें और मुझे पक्का यकीन है कि वे सब क्रान्ति के उद्देश्य के प्रति और भी समर्पित कर देने का संकल्प ले, उस संघर्ष को आगे बढ़ायें जो वे अपने पीछे छोड़ गई हैं और क्रान्ति के उस पथ पर आगे कदम बढ़ायें जो कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया है। इन शब्दों के साथ मैं दिवंगत कॉमरेड प्रतिभा कुमारी को श्रद्धांजली देते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ।

कॉमरेड प्रतिभा कुमारी लाल सलाम!

सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम!

एआईडीएसओ ने की छात्र आन्दोलन में दखलअन्दाजी बंद करने की मांग

बड़ोदरा (गुजरात): 27 नवम्बर को ऑल इण्डिया डीएसओ ने एमएस युनिवर्सिटी के वाईस–चांसलर और रजिस्ट्रार को छात्र आन्दोलन और छात्र गतिविधियों में युनिवर्सिटी विजीलेन्स द्वारा दखल दिए जाने के खिलाफ ज्ञापन सौंपा। 26 नवम्बर को विजीलेन्स सिक्युरिटी ने ऑल इण्डिया डीएसओ के स्वयंसेवकों और छात्रों को सेमेस्टर प्रणाली के खिलाफ पर्चे बांटने से रोका। 20 नवम्बर को परीक्षा बहिष्कार के दौरान विजीलेन्स ने छात्रों के साथ अक्खड़तापूर्ण व्यवहार किया। कुछ महीनों से युनिवर्सिटी विजीलेन्स छात्र आन्दोलन और छात्र गतिविधियों को रोकने का प्रयास कर रही है। ऑल इण्डिया डीएसओ ने ज्ञापन सौंप कर छात्र आन्दोलन और छात्र गतिविधियों में विजीलेन्स द्वारा की जा रही दखलअन्दाजी बंद करने की मांग की। एमएस यूनिवर्सिटी में आर्ट फैकल्टी में ऑल इण्डिया डीएसओ द्वारा एक कार्यक्रम आयोजित कर कपड़े के कैनवास पर छात्रों की राय ली गई जिसका प्रत्युत्तर बहुत अच्छा मिला।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing :5 Dec, 2013

एमबीबीएस छात्रा नीरज भड़ाना से बलात्कार व नृशंस हत्या काण्ड के खिलाफ प्रदर्शन

मुरादाबाद (उ.प्र.): मुरादाबाद के तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय की एमबीबीएस छात्रा नीरज भड़ाना की टीएमयू कैम्पस हॉस्टल में बलात्कार के बाद नृशंस हत्या के नामजद अभियुक्तों टीएमयू के कुलाधिपति सुरेश जैन व उसके पुत्र मनीष जैन की गिरफ्तारी न किए जाने, हत्याकाण्ड का खुलासा न किए जाने तथा सीबीआई द्वारा जाँच धीमी गति से चलाए जाने के खिलाफ 28 नवम्बर को जे.पी. नगर (अमरोहा) में एआईडीएसओ तथा एआईडीवाईओ ने संयुक्त रूप से प्रदर्शन किया। शहर के गाँधीमूर्ति चौराहे से पूरे शहर में जुलूस निकाला गया जो पुनः गाँधीमूर्ति चौराहे पर पहुँचकर सभा में तब्दील हो गया। जुलूस का नेतृत्व एआईडीवाईओ के प्रदेश उपाध्यक्ष कॉ. राजेन्द्र सिंह तथा एआईडीएसओ की कॉ. ऋतु चौधरी ने किया। गाँधीमूर्ति पर हुई सभा का संचालन कॉ. गम्भीर सिंह ने किया तथा सभा की अध्यक्षता मास्टर प्रीतम सिंह ने की। सभा के मुख्य वक्ता एआईडीवाई के प्रदेश अध्यक्ष कॉ. हरकिशोर सिंह थे। सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. ऋतु ने कहा कि टीएमयू में नीरज भड़ाना से पहले भी कई छात्राओं की हत्याएं की जा चुकी हैं। टीएमयू में शिक्षा ग्रहण कर रही छात्राओं का आर्थिक दण्ड माफ करने के एवज में टीएमयू प्रशासन द्वारा उनका यौन शोषण किया जाता है। डिग्री लेने के लिए अपनी अस्मत का सौदा करने से इन्कार करने वाली छात्राओं को बलात्कार के बाद हत्या कर उन्हें हॉस्टल की पांचवीं मंजिल से गिरकर आत्महत्या करना बताया जाता था। नीरज भड़ाना की भी इसी प्रकार हत्या की गई है। उसने अपनी अस्मत बेचने के बजाए, टीएमयू के शिक्षा माफिया से अन्तिम सांस तक बहादुराना संघर्ष किया, जिसकी पुष्टि उसके मृत शरीर पर पाए गए 19 गहरे जख्मों ने की। उन्होंने कहा कि आज छात्राएं शिक्षण संस्थानों में भी सुरक्षित नहीं हैं। उन्होंने तमाम छात्र-छात्राओं तथा विवेकशील लोगों से महिलाओं पर बढ़ते अपराधों के खिलाफ आगे आने वाले 29 दिसम्बर को दिल्ली के मावलंकर हाल में कन्वेंशन तथा 30 दिसम्बर को अखिल भारतीय संसद मार्च में बड़ी संख्या में भाग लेने की अपील की।

प्रदर्शन के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री को, नीरज भड़ाना के हत्यारों की तुरन्त गिरफ्तारी की मांग का एक ज्ञापन भेजा गया। इसी प्रदर्शन के माध्यम से उ.प्र. की चीनी मिलों को तत्काल चालू करने तथा गन्ना बकाया का ब्याज सहित भुगतान किए जाने के लिए एक ज्ञापन माननीय मुख्यमंत्री उ.प्र. को भी भेजा गया। ज्ञापन लेने के लिए उपजिलाधिकारी, अमरोहा सभा स्थल पर पहुँचे और ज्ञापन लिए तथा प्रदर्शनकारियों को आश्वासन दिया कि दोनों ज्ञापन माननीय प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री, उ.प्र. को अति शीघ्र भेज दिए जाएंगे। सभा को कॉ. दिगराज सिंह, नौबहार सिंह, कॉ. राजेन्द्र सिंह एडवोकेट ने सम्बोधित किया।

रोहतक (हरियाणा) में 28 नवम्बर को सरकारी भेदभाव व अनदेखी के खिलाफ आशा कार्यकर्ता यूनियन हरियाणा सम्बन्धित ऑल इण्डिया यूटीयूसी ने मुख्यमंत्री के गृहनगर रोहतक में प्रदेश स्तरीय रोष प्रदर्शन किया

महिलाओं का कन्वेंशन सम्पन्न

जौनपुर (उ.प्र.): महिलाओं पर बढ़ते अपराधों के खिलाफ ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की जिला कमेटी के तत्वावधान में 17 नवम्बर को स.ब. इण्टर कॉलेज बदलापुर के प्रांगण में जिला स्तरीय महिला कन्वेंशन आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत में एक जुलूस भी निकाला गया जिसने बदलापुर नगर की परिक्रमा की। कन्वेंशन की अध्यक्षता कॉ. शान्ति मौर्या (जिलाध्यक्ष) व संचालन कॉ. अनीता गुप्ता ने किया। संगठन की उ.प्र. की राज्य संयोजिका कॉ. रश्मि मालवीय मुख्यवक्ता थीं। कार्यक्रम को चन्द्रावती निगम, संगठन की जिला सचिव कॉ. मीता गुप्ता, बासमती व कॉ. रविशंकर मौर्य ने भी सम्बोधित किया। वक्ताओं ने 16 दिसम्बर को लखनऊ तथा 29-30 दिसम्बर को दिल्ली में होने वाले धरना प्रदर्शन में पहुँचने की अपील की। जोरदार नारों के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

बिरसा मुण्डा स्मृति सभा

आदित्यपुर (झारखण्ड): 15 नवम्बर को सरायकेला-खरसवां जिला स्थित सिधु-कानू फ्री कोचिंग सेण्टर, कुलुपटांगा बस्ती, आदित्यपुर-2 के प्रांगण में वीर बिरसा मुण्डा की जयन्ती ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेण्ट्स ऑर्गेनाइजेशन के तत्वावधान में सम्मानपूर्वक मनाई गई। स्मृति सभा में मुख्य अतिथि थे समाजसेवी बलदेव इचागुटु। उन्होंने बिरसा मुण्डा की तस्वीर पर माल्यार्पण किया। उपस्थित छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए उन्होंने बिरसा मुण्डा के जीवन संघर्ष पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बिरसा सिर्फ आदिवासियों के ही मसीहा नहीं थे बल्कि तत्कालीन आन्दोलनकारियों के भी प्रेरणास्रोत रहे हैं। सभा का संचालन सरसवती कुमारी ने किया और धन्यवाद ज्ञापन विष्णुदेव गिरी ने किया।

जौनपुर में छात्र संघ चुनाव में ऐतिहासिक जीत

जौनपुर (उ.प्र.): पूर्वांचल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध जौनपुर जिला का सबसे महत्वपूर्ण कॉलेज, तिलकधारी महाविद्यालय के छात्र-संघ चुनाव में पुस्तकालय मंत्री पद पर विशाल कुमार मौर्य व कला संकाय प्रतिनिधि पद पर पूर्णजीत गुप्त को ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. ने उम्मीदवाद बनाया और पुस्तकालय मंत्री पद पर 1034 वोट पाकर जीत हासिल किया और कला संकाय प्रतिनिधि पद पर बहुत ही कम अन्तर से हार हुई।

आशाकर्मी तारादेवी के हत्यारों को फांसी देने की मांग

सुल्तानपुर (उ.प्र.): प्रदेश में हर रोज हो रही महिलाओं के साथ छेड़खानी, बलात्कार एवं हत्या की घटनाएं और सरकार द्वारा इन पर अंकुश नहीं लगाये जाने के खिलाफ और कानपुर देहात जिले के सिकन्दरा थाना अन्तर्गत स्थित मानपुर डेरा गाँव की आशाकर्मी तारा देवी के हत्यारों को फांसी देने की मांग को लेकर 19 नवम्बर को एसयूसीआई(सी) व एआईएमएसएस के कार्यकर्ताओं ने सुल्तानपुर जिले में प्रतिवाद दिवस मनाया और जिला अधिकारी की मार्फत मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा।

प्रदर्शन का नेतृत्व एसयूसीआई(सी) के जिला सचिव कॉ. जगन्नाथ वर्मा व एआईएमएसएस जिला अध्यक्ष कॉ. उषा सिंह ने किया। जुलूस तिकोनिया पार्क से निकाला। ज्ञापन में आशाकर्मी तारादेवी के हत्यारों को फांसी देने, आश्रितों को कम से कम 10 लाख रुपए मुआवजा देने, आश्रितों को सरकारी नौकरी देने, आशा कर्मियों सहित सभी महिलाओं की सुरक्षा की गारण्टी करने तथा टीएमयू की मेडिकल छात्रा नीरज भड़ाना के हत्यारों को भी फांसी की सजा देने की मांग की गई।

जिला अधिकारी को ज्ञापन देने वालों में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के जिला सचिव कॉ. जगन्नाथ वर्मा, एआईएमएसएस की जिला अध्यक्ष कॉ. उषा सिंह, बंशीधर वर्मा, आर एस यादव एडवोकेट, करूणा, शंकर तिवारी, रामसूरत वर्मा, विधावती तिवारी, अशोक निषाद, मनोज यादव, आदि प्रमुख लोग थे।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. सत्यवान द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष:011-25726631, Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com; sarvaharadrishtikon@yahoo.com